E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सहरिया जनजाति की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक परिदृश्य की प्रासंगिकता

डॉ. जयश्री त्रिवेदी

प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष, राजनीति शास्त्र, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया (म.प्र.)

रिचा कुशवाह

शोध छात्रा, राजनीति शास्त्र, जीवाजी विश्व विद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Rcevied date

05/08/2025

Paper date Publishing Date

10/08/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.17087480

IMPACT FACTOR 5.924

शोध-सार

भारत देश में आदिवासी जनजाति समूह एक ऐसा समूह है जो एक निश्चित क्षेत्र में स्वयं की सभ्यता, संस्कृति रहन-सहन और भाषा की परिधि में निवास रखते हैं तथा विकास की दृष्टि से सबसे पिछड़े हुए होते हैं। सहरिया जनजाति अत्यंत प्राचीन है इसका उल्लेख वैदिक ग्रंथो बौद्ध ग्रंथों में मिलता है। ऐतिहासिक होने के बावजूद वर्तमान समय में भी जंगलों आसपास के गांवों में इनका अस्तित्व जाण भी कायम है। अशिक्षित आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण यह जनजाति अत्यंत पिछड़ी हुई है।

सहरिया जनजाति की ऐतिहासिक पृष्टभूमि व राजनैतिक चेतना के स्तर का अध्ययन करना है। आजादी के इतने सालों बाद भी भारत में आदिवासी उपेक्षित, शोषित, पीडित नजर आते है। आदिवासी किसी राज्य अथवा क्षेत्र में नहीं बल्कि पूरे देश में फैले है। जल, जंगल, जमीन को लेकर उनका शोषण निरंतर चला आ रहा है वर्षों से शोषित रहे समाज के लिए परिस्थितियों आज भी कष्टप्रद और समस्याएँ बहुत अधिक है।

मुख्य शब्द- अर्वाचीन, सहस्त्र, परम्परा, संस्कृति, पितृसत्तात्मक

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

जनजाति-सहरिया जनजाति राजस्थान में बारां जिले की शाहबाद व किशनगंज तहसीलों में बसे हुए हैं। यह राजस्थान की आदिन जाति कहलाती है. क्योकि जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग के अनुसार ये आदिवासी दूसरी जनजातियों भील मीणा, डामोर, गरासिया से भी पिछड़े हैं। सहरिया अरबी शब्द से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है- जंगल। कुछ विद्वानों का मानना है कि सहरिया राजस्थान के रेगिस्तान भूमि के मूल निवासी है और सहरिया शब्द फारसी शब्द सेहरा से लिया गया है। जिसका अर्थ है- रेगिस्तान सहरिया लोगों के अनुसार, शब्द सरिया से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है- घुमन्तु जाति यायावरी एक और संस्करण सहरिया नाम से सहारा रेगिस्तान) क्षेत्र शब्द से सम्बन्धित है। जो चंबल और यमुना के बीच की माना गया है। पूर्व में कभी इस क्षेत्र में सेहत जनजाति द्वारा निवास किया गया था और मुस्लिम आक्रमण के दबाव में वे लोग जंगली क्षेत्रों की ओर चले गये थे। पश्चिम हिस्सा बाद में सेहेश को सहरिया के रूप में जाना जाने लगा। विभिन्न स्थानों पर सहरिया जाति को खड़ा, सोनर सहरिया, सोरिया, सीर इत्यादि नामों से जाना जाता है।

सहरिया जनजाति पारंपरिक रहन-सहन धार्मिक मान्यताएं, जादू टोना आदि पर आज भी इनका विश्वास है। वनोपज जीवन का मूल आधार है पर यह भी दलाल के माध्यम से विक्रय होने के कारण केवल मजदूर बनकर रह गए हैं। पूरे विश्व में परिवर्तन की लहर मे सहरिया जनजाति अपनी संस्कृति को भूलती जा रही है जिसे सहेजने की आवश्यकता है। इसी संदर्भ में सहरिया जनजाति के आर्थिक धार्मिक सामाजिक जीवन शैली को जानने की आवश्यकता है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये शोध का विषय चुना गया है।

भारत विविधताओं का देश है जहाँ हर जगह विभिन्न संस्कृतियों के रंग बिखरे हुए है। इसी विविधता का लगभग 21.09 प्रतिशत भाग आदिवासी जनजातियों की संस्कृति से सरोबार है। मध्य प्रदेश भौगोलिक दृष्टि से देश के मध्य में स्थित होने के कारण विभिन्न जनजातियों की जीवन शैली और संस्कृतियों को अपने अंदर समेटे हुए हैं।

भारत सरकार द्वारा निर्धारित सूची के अनुसार यहां 43 अनुसूचित जनजातियां अपने समूह के साथ निवास करती है जिनकी संख्या लगभग 1 करोड़ 53 लाख 16 हजार 704 है। यह आबादी देश की जनजातीय आबादी का 14.64 प्रतिशत है मध्यप्रदेश में भील. भिलाला बारेला, पटेलिया,

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बैगा कोरकु गोड बहुत सी जनजाति है जिसमें बैगा भारिया (पातालकोट जैन) और सहरिया भारत सरकार द्वारा घोषित विशेष पिछड़ी जनजातियां हैं।

सहरिया मध्य प्रदेश की उन जनजातियों में से एक है जो विकास की दृष्टि से अत्यंत पिछड़ी हुई और शहरीकरण, तकनीकी बदलाव के कारण अपनी पहचान खोती जा रही है। इन्ही जनजातियों में से सहरिया जनजाति का अध्ययन कर इनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को उजागर करने का पूरा प्रयत्न किया है।

आदिवासी हमारे देश के मूल निवासी है। प्राचीन भारतीय सभ्यता. संस्कृति एवं इतिहास की बहुमूल्य धरोहर के रूप में उन्होंने अपना आदिरूप प्राचीन से अर्वाचीन युग तक संजो के रखा है। इन लोगों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति अत्यधिक दयनीय रही है। उन्हें सदैव ही अनेक प्रकार के शोषण व उत्पीड़न का शिकार होना पड़ा है। गरासिया, सहरिया डामोर, कथोड़ी कंजर आदि है। इनमें से सहरिया एकमात्र ऐसी जनजाति है जिसे राजस्थान की एकमात्र आदिम जनजाति में गिना जाता है।

जो जब बहुत थोड़े रह गए हैं। सहरिया आदिवासी पूरी तगृह वन उपजा के एकत्रीकरण पर आश्रित होते है। इस क्षेत्र की वन उपजे भी काफी महत्वपूर्ण हैं- चिरौजी, लाख, गोद, आवला, महुआ. शहद, सफेद मूसली इनमें प्रमुख हैं। आज भी सहरिया जंगल से ये सब एकत्रित करता है परन्तु यह सब उत्सते सीने-पौने दामों पर अटक लिया जाता है। जब अधिकतर सहरिया आदिवासी मजदूरी और खेती करते हैं। यह राजस्थान की एकमात्र जनजाति जिसे आदिव-जनजाति का दर्जा प्राप्त हैं। सरकार ने उनकी स्थिति को सुदृढ करने के लिए मनरेगा में 100 दिन का अतिरिक्त राजेगार प्रदान करती है।

सहरिया जनजाति का राजनीतिक परिदृश्य - किती भी सामाजिक व्यवस्था में नियमितता व नियंत्रण बनाएं रखने के लिए जो संगठन काम करते है उन्हें राजनैतिक संगठन के रूप में जाना जाता है। चाहे इन राजनैतिक संगठनों अथवा व्यवस्थाओं का स्वरूप परम्परागत रूप से मान्य

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राज्य व सरकार से अलग ही क्यों ना हो। ये राजनैतिक संगठन समाज के विभिन्न सदस्यों का संगठनों के मध्य संबंधों का संचालन करते हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर नियंत्रण बनाओं रखने के लिए दबाव का प्रयोग करते है।

सहरिया जनजाति का कभी भी राजनीति में इस्तखेप नहीं रहा और ना ही ये कभी शासकों के समीप रहे हैं ये हमेशा उपेक्षित ही रहे सहरिया जनजाति बहुल्य क्षेत्र को हाड़ोती कहते हैं। ये लोग हाड़ौती बोली ही बोलते व समझते हैं। इनके क्षेत्र में सर्वाधिक जंगल थे

सहरिया जनजाति की पृथक्करण पहली बार ब्रिटिश काल में टूटा जब सरकार ने इनके सघन वनों की कटाई करवाकर सड़कों का निर्माण किया है । इस कारण इनके समक्ष राजी-रोटी का संकट आ खड़ा हुआ। अन्य आदिवासी समुदायों के समान ही सहरिया जनजाति में मी परम्परागत राजनैतिक संगठन पाया जाता है जिसकी समाज में विशिष्ट पहचान होती है। सुहरिया व अन्य आदिवायों के समान ही गांव के बाहर रहना पसन्द करते है सहरिया अपनी बस्ती को सहरना कहते है। सहरना में एक ही गीत्र के व्यक्ति निवास करते है। सहरना के बीच में एक छतरीनुमा गोल झोपड़ी बनाते हैं जिसे बंगला कहते हैं बंगला सहरवा की सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र होता । सहरवा में आये व्हराया जाता था। सहरिया जनजाति के परिवार को कुटुम्ब कहा जाता है तथा ये पितृसत्तात्मक होते हैं।

किसी भी व्यक्ति के मेहमान को उसी बंगला में सहरिया जनजाति में सहरना के आधार पर ही पंचायत का गठन किया जाता है। इसका प्रमुख पटेल होता है पटेल का पद वंशानुगत होता है। सहरिया जनजाति में जाति पंचायत का प्रभाव होता है यही आपसी विवादों का निपटारा करती है।

सहरिया जनजाति द्वारा किसी भी प्रकार का बड़ा अंतिम निर्णय चौरासिया पंचायत द्वारा किया जाता इश्यनरिया ओपा, बराई, कोटवारा तथा गाँव के वयोवृद्ध सहरिया पंचायत के पाँच पंच के रूप में काम करते है। पंचायत के कोई भी सामाजिक व धार्मिक कार्य बिना पटेल व प्रधान के संभव नहीं है। पटेल समाज की समस्याओं को गांव की पंचायत में ही पूरा प्रयास करते है। पटेल द्वारा किसी भी तरह की अकुशलता या अपराध किया जाना है तो उसे उसके पद से हटा दिया जाता है तथा

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

उसके स्थान पर दूसरा पटेल चुन लिया जाता है। पंचायत में महिलाओं का कोई हस्तक्षेप नहीं माना जाता और ना ही इन्हें बंगला में जाने की इजाजत होती क्योंकि उनका मानना था कि ये दूसरे गांव से आई है इसलिए इस गांव की सदस्य नहीं मानी जाती थी पंचायत का निर्णय हर स्त्री-पुरुष को मानना जरूरी होता है। परित्यक्ता या बेसहारा लड़की के माँ पिता पंच होते थे तथा वे ही उनकी जिम्मेदारी उठाते थे।

वर्तमान राजनैतिक परिदृश्य पर नजर डाले तो पता चलता है कि वाहा समाज के सम्पर्क के परिणामस्वरूप जनजातियों की राजनैतिक चेतना में उत्तरोत्तर प्रगति हुई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जैसे-जैसे व्यायालय व पुलिस का प्रभाव बढ़ा है जनजातीय पंचायतों का प्रभाव कम हुआ है।

वर्तमान में सहरिया जनजाति के लोग अपने आपसी विवादों का निपटारा करने के लिए याने या पुलिस की सहायता लेते है जिसमें उनकी पुरातन पंचायती की शक्तियों का पतन हुआ है उनका मानना है। कि पंचायतों के द्वारा निर्णय में देरी व हरजाना की राशि का दिला पाने की बजाय लोग पुलिस की मदद लेना अधिक पसंद करते राजनैतिक जागरुकता के आंकलन से निष्कर्ष निकलता है कि सहरिया समाज में महिलाएं मतदान में पुरुषों से अधिक बढ़-चढ़ कर हिस्सा होती है। मतदान महिलाओं के लिए किसी पर्व से कम नहीं होता वो मतदान केन्द्र तक नाचते-गाते पहुँचती है।

वर्तमान में सम्पूर्ण सहरिया समाज संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। समाज की नयी पीढी अपनी परम्परा, संस्कृति एवं इतिहास को विस्मृत करती जा रही है। सरकार द्वारा चलाये जा रहे विकास कार्यक्रमों के बावजूद इनमें अभी पूर्ण चेतना का विकास नहीं हो पाया है सहरिया जनजाति के लोगों में संचय की प्रवृत्ति का सदैव से ही अभाव रहा है इनके लिए आज कमाया आर्गे गवाया वाली कहावत सही साबित होती है। इसके अतिरिक्त क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल, चिकित्सा सुविधा, शौचालय सुविधा का भी अभाव है वस्तुत आज सहरिया जनजाति के लोग गरीबी, नशाखोरी, अशिक्षा के चक्रव्यूह में दिन प्रतिदिन फसते हुए क्षीण हो रहे हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सहरिया जनजाति के विकास हेतु किये गये संवैधानिक प्रावधानों का लाभ उन्हें तब तक नहीं मिलेगा जब तक इनके मानव विकास पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया जायेगा। मानव विकास की अवधारणा अपनी प्रकृति से ही व्यक्तियों के स्वास्थ्य, शिक्षा व गरिमामय रहन-सहन से जुड़ी हुई है। अतः जब व्यक्ति स्वस्थ एवं शिक्षित होगे तो वे स्वतः ही अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होंगे और मानवाधिकारों का हनन मी' कम होगा। देश की धरोहर आदिम जनजातियों का संरक्षण भी हो सकेगा।

संदर्भ सूची

1. जोशी, करूणा, जनजातीय क्षेत्र में स्वतंत्रता आन्दोलन, राजस्थानीग्रन्यागार, जोधपुर, 2006, पू. 52

2. सेन्सस ऑफ इण्डिया 1921 बाल्युम 33 पार्ट 1 पू. 5

3. नेहता प्रकाशचन्द्र आदिवासी संस्कृति एवं प्रयाएँ डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2009 पू. 36

4. लिरगुर्ण, वसंत, सहरिया मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला मंडल, भोपाल, 1990, पू. 40

5. मीणा, शीतल, जनजातियों मानवाधिकार एवं मानव विकास, पोइन्टर पब्लिकेशन, जयपुर 2012. पू. 13